अध्यात्म-रामायण से

रामकथा

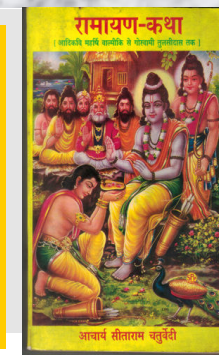

(अंक संख्या 101 से आगे)

आचार्य सीताराम चतुर्वेदी

यह हमारा सौभाग्य रहा है कि देश के अप्रतिम विद्वान् आचार्य सीताराम चतुर्वेदी हमारे यहाँ अतिथिदेव के रूप में करीब ढ़ाई वर्ष रहे और हमारे आग्रह पर उन्होंने समग्र वाल्मीकि रामायण का हिन्दी अनुवाद अपने जीवन के अन्तिम दशक (80 से 85 वर्ष की उम्र) में किया वे 88 वर्ष की आयु में दिवंगत हुए। उन्होंने अपने बहुत-सारे ग्रन्थ महावीर मन्दिर प्रकाशन को प्रकाशनार्थ सौंप गये। उनकी कालजयी कृति रामायण-कथा हमने उनके जीवन-काल में ही छापी थी। उसी ग्रन्थ से अध्यात्म-रामायण की कथा हम क्रमशः प्रकाशित कर रहे हैं।

- प्रधान सम्पादक

गतांक से आगे

रावणके मारे जानेपर मन्दोदरी आदि स्त्रियाँ भी रावणके शवके पास आकर विलाप करने लगीं; यहाँतक विभीषण भी उन्हें देखकर अपने आँसू न रोक पाए। रामके आदेशसे लक्ष्मणने विभीषणको तत्त्वज्ञानका उपदेश देकर समझाया और कहा कि अपने भाईका विधिवत् अन्त्येष्टि संस्कार कर डालो और इन स्त्रियों को लंकापुरीमें भेज दो। यह सुनकर विभीषणने रामसे कहा कि रावण बड़ा दुष्ट और क्रूर था। उसका संस्कार मैं कैसे कर सकता हूँ ? यह सुनकर रामने विभीषणसे कहादेखो, वैर तो मरनेतक रहता है। अब हमारा काम हो चुका। इसलिये अब तो यह जैसा तुम्हारा (भाई) है, वैसा ही मेरा भी है। अतः, इसका संस्कार कर डालो

मरणान्तानि वैराणि निवत्तं नः प्रयोजनम्।

क्रियतामस्य संस्कारो ममाप्येष यथा तव।।

तब विभीषणने रामकी आज्ञासे मन्दोदरी आदिको बड़ा ढाढ़स बंधाया और रावणके सब अन्त्येष्टि संस्कार कर डाले। सब राक्षसियोंके चले जानेपर भगवान् रामके पास बड़े विनीत भावसे विभीषण आ खड़े हुए। मातलि भी रामकी परिक्रमा करके इन्द्रका रथ लेकर स्वर्गलोक चला गया। यह सब हो चुकनेपर रामने लक्ष्मणसे कहा कि यों तो मैंने पहले ही विभीषणको लंकाका राज्य दे दिया है तथापि तुम इसी समय लंकामें जाकर विभीषणका विधिवत् अभिषेक कर आओ। लक्ष्मण तुरन्त वानरोंको साथ लेकर लंकापुरीमें जाकर विभीषणका अभिषेक कर आए। सबके आ जानेपर रामने हनुमानसे कहा कि तुम विभीषणको सम्मत्तिसे रावणके भवन में जाकर सीताको रावणके वध आदिका वृत्तान्त सुना आओ, फिर वे जो कुछ उत्तर दें मुझे आ सुनाना।

हनुमानने रावणके भवन में शिशपा वक्षके नीचे रामका ध्यान किए बैठी हई सीताको प्रणाम करके रावणकी मत्युका समाचार कह सुनाया। यह प्रिय सन्देश

सुनकर जानकीने कहा कि मैं तुम्हें क्या पुरस्कार दूं क्योंकि ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो तुम्हें उपहार में दी जा सके। हनुमानने कहा कि मैं श्रीरामका सदा दर्शन करता रहता हूँ, यही मेरे लिये सबसे बड़ा पुरस्कार है। तब जानकीने हनुमान्‌से कहा - मैं रघुनाथजीके दर्शन करना चाहती हूँ, उसकी शीघ्र ही मुझे आज्ञा मिले।

हनुमान् से यह समाचार पाकर रामने विभीषणसे कहा कि तुम जानकीको स्नान कराकर, शुद्ध निर्मल वस्त्र पहनाकर, सारे आभूषणोंसे सुसज्जित करके यहाँ लिवाते लाओ। सीताजीका पूर्ण शृङ्गार करके, विभीषण उन्हें पालकी में बैठाकर लिवा ले चले। जब वानर उन्हें देखने के लिये लपके, तब छड़ीदारोंने उन्हें हटो-बचो कहकर रोक दिया। यह देखकर रामने विभीषणसे कहा कि सीताको पैदल ही चलकर आने दो, जिससे सब उनके दर्शन कर सकें। सीताके आनेपर रामने उन माया-सीताको बहुत-सी न कहने योग्य बातेंतक कह डालीं

रामोऽपि दृष्ट्वा तां मायासीतां कार्यार्थनिर्मिताम्।

अवाच्यवादान्बहुशः प्राह तां रघुनन्दनः॥

यह सुनकर सीताने लक्ष्मणसे कहा— भगवान् रामके विश्वासके लिये और लोगोंको निश्चय करानेके लिये तुम शीघ्र ही अग्नि प्रज्वलित कर दो। कहने-भरकी देर थी। लक्ष्मणने तत्काल अग्नि प्रज्वलित कर जगाई। सीताने रामकी परिक्रमा करके अग्निसे हाथ जोड़कर कहा – 'यदि मेरा हृदय श्रीरघुनाथजीको छोड़कर कहीं अन्यत्र नहीं जाता हो तो समस्त लोकोंके साक्षी अग्निदेव मेरी सब ओरसे रक्षा करें।' यह कहकर सीता उस प्रज्वलित अग्नि में जा खड़ी हुई। यह देखकर तो सब लोग व्याकुल होकर कहने लगे कि रामने अपनी लक्ष्मी- सदृश सीताजीको इस प्रकार कैसे कह दिया। अग्निदेव और देवताओंके आ कहनेसे रामने सीताको स्वीकार कर लिया।

उसी समय सब देवता, पितृगण, ऋषि, मुनि, सिद्ध आदि भी आ-आकर रामकी स्तुति करने लगे। शंकरने आकाशसे ही कहा कि मैं तो आपसे राज्याभिषेकके समय अयोध्यापुरीमें ही मिलूँगा। इस समय आप अपने पिता दशरथका दर्शन कर लीजिए। राम और लक्ष्मणने जब दशरथको प्रणाम किया तब दशरथने उन्हें हृदयसे लगाकर कहा-बेटो! तुमने मुझे संसाररूपी दुःख-समुद्रसे पार कर दिया।

तब रामने इन्द्रसे कहा कि आप अमृत बरसाकर इन वानरोंको तुरन्त जीवित कर दीजिए। अमृत बरसाते ही रामकी सेनाके मरे हुए वानर तो जीवित हो उठे, किन्तु राक्षस मरे ही पड़े रह गए। विभीषणने रामसे प्रार्थना की कि आप सीता-सहित मंगल स्नान कर लीजिए, फिर कल भाई लक्ष्मणके सहित वस्त्राभषणोंसे सज्जित होकर हम सब भी आपके ही साथ चले चलेंगे। विभीषणके वचन सुनकर रामने कहा - 'देखो, भरत मेरी बाट देख रहा होगा। उससे विना मिले मैं

द हिन्दू पैंथन, एडबर्ड मूर, (चित्र सहित नवीन संस्करण) डब्ल्यू.पी. सिम्पसन, 1864 ई. में प्रकाशित।

द हिन्दू पैंथन, एडबर्ड मूर, (चित्र सहित नवीन संस्करण) डब्ल्यू.पी. सिम्पसन, 1864ई. में प्रकाशित

स्नान अथवा वस्त्राभूषण-धारण कैसे कर सकता हूँ? अतः, तुम केवल सुग्रीव आदि वानरोंका ही सत्कार कर डालो।'

विभीषणने सब वानरोंका उनकी रुचि और इच्छाके अनुसार भरपूर सत्कार कर दिया और रामने सबकी बड़ाई करके उन्हें सन्तुष्ट कर दिया। तब विभीषणके लाए हुए पुष्पक विमानपर जानकी और भाई लक्ष्मणके साथ चढ़कर उन्होंने सुग्रीव, अंगद, विभीषण आदिसे कहा कि आप लोग मित्रका पूरा धर्म निभा चुके हैं, अब आप लोग भी अपने-अपने इच्छित स्थानोंको चले जा सकते हैं और मैं भी अपने पिताकी राजधानी अयोध्याको चला जाना चाहता हूँ। इसपर सब कह उठे कि हम भी आपके साथ अयोध्या चलकर, आपका राज्याभिषेक देखकर तथा माता कौशल्याकी वन्दना करके ही लौटना चाहते हैं। यह सुनकर रामने सबको विमानपर बुला चढ़ाया और वह पुष्पक विमान सबको लिए-दिए आकाशमें उड़ चला --

तेष्वारूढेषु सर्वेषु कौवेरं परमासनम्।
राघवेणाभ्यनुज्ञातमुत्पपात विहायसा ॥

विमानपर चढ़े हुए राम अपनी धर्मपत्नीको सब स्थान दिखाते हुए किष्किन्धा जा पहुँचे। वहाँ रामकी आज्ञासे सुग्रीवने तारा आदि स्त्रियोंको भी विमानपर बुला बैठाया। सीताको सब स्थान दिखाते हुए राम प्रयाग पहुंच गए और दूरसे अयोध्या दिखाकर सीतासे बोले - लो, प्रणाम कर लो। यह सब दिखाकर राम उतरकर भरद्वाज मुनिके आश्रमपर जा पहुँचे।

चौदहवें वर्षकी पंचमीको उन्होंने भरद्वाज ऋषिको प्रणाम जा किया और उनसे भरत, शत्रुघ्न, अयोध्या और अपनी

माताओंका कुशल-मंगल पूछ लिया। भरद्वाजने सबका कुशल बताकर भरतकी तपस्याका सारा विवरण सूनाकर कहा-आप आज तो सेनासहित यहीं ठहरकर भोजन करके मेरा घर पवित्र कीजिए, कल अपनी राजधानी जाइएगा। यह सुनकर वे अपनी सेना और सीता-लक्ष्मण सहित वहीं ठहर गए।

वहाँ रामने हनुमानसे कहा कि तुम अयोध्या जाकर देख आओ कि राज-भवन में सब कुशल तो है न ! शृङ्गवेरपुर में मेरे मित्र गुहसे मिलकर उन्हें जानकी-लक्ष्मण-सहित मेरे आनेकी सूचना दे देना फिर नन्दिग्राममें जाकर भरतसे मेरा कुशल सुनाकर और लंकाकी सारी घटनाएँ बताकर कह देना कि मैं शीघ्र ही वानरोंके साथ आ ही पहुँच रहा हूँ। उसे सुनकर भरतकी जो चेष्टा हो वह देखकर तुरन्त मेरे पास लौट आना। हनुमान तत्काल गुहसे मिलकर भरतके पास जा पहुँचे और उन्होंने सब समाचार उन्हें कह सुनाया। यह सुनकर भरत हर्षसे मूच्छित हो गिरे और फिर हनुमानको गलेसे लगाकर बोले-यह समाचार सुनानेके लिये मैं तुम्हें एक लाख गौएँ, सौ गाँव और परम सुन्दरी सोलह कन्याएँ दिए देता हूँ। अब केवल यह भर बता दो कि रामका वानरोंके साथ समागम कैसे हो गया? हनुमानने सुग्रीवसे मित्रता होनेकी सारी कथा भरतको कह सुनाई।

अयोध्या रामका आगमन भरतने शत्रुघ्नको आज्ञा दी-जाओ, कह दो, रामका दर्शन करनेके लिये सब लोग चले चलें। अयोध्यापुरी सजा दी गई और भरत अपने सिरपर भगवान्की पादुकाएँ रखकर पैदल ही चल पड़े। उसी समय दूरसे ही पुष्पक विमान भी आता दिखाई दे गया। उसे देखना था कि सब लोग हर्षसे चिल्ला उठे। रामकी आज्ञासे जब विमान धरतीपर उतर आया तब रामने भरत और शत्रुघ्नको भी विमानपर चढ़ा बैठाया। जब रामको भरत प्रणाम करने लगे तब रामने उन्हें उठाकर गलेसे लगा लिया। फिर भरतने लक्ष्मणसे मिलकर सीताको प्रणाम किया और रामके साथ आए हुए सुग्रीव आदिको गलेसे लगाकर सुग्रीवसे कहा कि तुम्हारी ही सहायतासे रामकी विजय हो पायी है, इसलिये तुम अबसे हमारे पाँचवें भाई हो गए हो। फिर शत्रुघ्नने भी राम-लक्ष्मण और सीताको तथा रामने अपनी माता कौशल्या, कैकेयी और सुमित्राको जा प्रणाम किया। तभी भरतने रामकी पादुकाएँ रामके चरणोंमें ला पहनाईं और कहा- लीजिए, आपकी धरोहर आपको ही सौंपे दे डाल रहा हूँ। भरतको गोदमें लिए हुए राम उसी विमानपर चढ़कर भरतके आश्रममें चले गए और वहाँ पुष्पक विमानसे उतरकर विमानको कुबेरके पास भेज दिया।

रामका राज्याभिषेक भरतकी प्रार्थनापर रामने भरतसे राज्य लेना स्वीकार कर लिया। भरत, लक्ष्मण, सुग्रीव और विभीषणके स्नान कर चुकनेपर रामने भी जटाजूट कटवाकर स्नान कर लिया। लक्ष्मण और भरतने तो उन्हें विभूषित किया तथा राज-महिलाओंने सीताका शृङ्गार कर दिया। तब सब लोग रथपर चढ़कर अयोध्यापुरीको चल दिए। राजमहल में जाकर रामने अपने साथ आए हुए सुग्रीव आदि सबके ठहरनेकी बड़ी उत्तम व्यवस्था कर दी। यह हो चुकनेपर वशिष्ठ आदि महर्षियोंने विधिपूर्वक रामका अभिषेक कर दिया।

राज्याभिषेक हो जानेपर रामने सबको यथायोग्य बहुत-सा दान दिया और भुजबन्द दिए। उन्होंने एक बहुमूल्य हार जानकीको देकर कहा कि तुम जिसे चाहो उसे यह हार दे डालो। सीताने वह हार लेकर हनुमानको दे दिया जिसे पहनकर हनुमान गौरवान्वित हो उठे। तब रामने हनुमानसे कहा कि तुम्हारी जो इच्छा हो वह वर माँग लो। हनुमानने कहा-मैं यही चाहता हूँ कि निरन्तर आपका नाम स्मरण करता हुआ पृथ्वीपर बना रहूँ और जबतक संसार में आपका नाम रहे तबतक मेरा शरीर भी बना रहे। सीताने भी कहा कि तुम जहाँ कहीं रहोगे वहाँ सारे भोग तुम्हारे पास स्वयं ही आ उपस्थित होंगे। वे रामको वार-बार प्रणाम करके तपस्या करने के लिये हिमालयपर चले गए। तब रामने गुहको भी बिदा करके लक्ष्मणको युवराज पदपर अभिषिक्त कर दिया।

रामके राज्य में न कोई स्त्री विधवा होती थी, न कहीं सों, व्याधियों और लुटेरोंका भय था, न कोई अनर्थ होता था और न बालकोंकी मृत्यु होती थी। वहाँ उचित समयपर मेघ जल बरसाते थे, प्रजा अपना धर्म पालन करती तथा वर्णाश्रमोंके गुणोंसे युक्त थी। इस प्रकार पुत्रोंके समान प्रजाका पालन करते हुए रामने दस सहस्र वर्षांतक राज्य किया।

॥ युद्धकाण्ड पूर्ण ॥